भारत की संस्कृति संस्कृत भाषा

श्रीमती ज्योति ध्यानी (अध्यापिका)
बहादराबाद

भारत के लिए संस्कृत शब्द उसकी चेतना शक्ति है, यदि संस्कृत भाषा को भारतीय जीवन से निकाल दिया जाए तो केवल कतिपय बाहर के कुछ प्रक्षिप्त शब्द ही शेष रह जायेंगे, संस्कृत भाषा भारतीयों की सबसे प्राचीनतम् भाषा है, इसलिए इसे 'देशवाणी' भी कहा जाता हैं।

संसार को जीवन देने वाला शास्त्र आयुर्वेद शास्त्र न केवल संस्कृत भाषा में निबद्ध है। इस शास्त्र में अनेक जड़ी–बूटियों एवं उपयोग का वर्णन भी है, जिनका उपयोग अनेक रोगो व्याधियों के शमन करने में उपयोग होता है। वनोषधियों का वर्णन आयुर्वेद संस्कृत ग्रन्थ में ही निहित है। संस्कृत साहित्यों में बहते हुए जल की महता का वर्णन करके लिखा है कि जल धाराओं, मन्दिरों, जलाशयों एवं आवासीय क्षेत्रों के निकट मल मूत्र विसर्जित करना महापाप है। लेकिन फिर भी पाश्चत्य जनभावना से ग्रसित लोगों ने सम्पूर्ण मल–मूत्र नदियों में डालकर नदियों को इतना दूषित कर दिया है कि जल–स्पर्श एवं आचमन करने लायक तक नहीं रहा है। हमारी संस्कृति में सभी नदियों को 'माँ'–'गंगा मैया' कहकर सम्बोधित किया जाता है।गंगा जल की कियाकलापों में इस जल का उपयोग करके इसे मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बतलाया गया है। संस्कृत ग्रन्थों में प्रकृति के संरक्षण को भी स्पष्ट किया गया है।

चरित्र निर्माण की दिशा में भारतीय दर्शन अमूल्य धरोहर है। पाश्चात्य दार्शनिकों में मैक्समूलर ने भारतीय दर्शन को संस्कृत भाषा से निबद्ध करते हुए कहा है। ''जहां से पाश्चात्य दर्शन समाप्त हो जाता है वहीं से भारतीय दर्शन आरम्भ होता है'' संस्कृत भाषा में आचरण के विषय में भी कहा गया है कि आचारहींन न पुननित वेदाः और।

वृत्तं मलेंन संरक्षेद् वित्तमायाति यातिन्च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्तितस्तु हतो हतः।।

कपिल, कणाद, जैमिनी आदि ऋषियों ने संस्कृत भाषा को समस्त संसार की धरोहर बनाया है। भारतीय इतिहास के विषय में कहा है कि हमारा इतिहास जितना सुस्पष्ट है, उतना अन्य कहीं नहीं है। इतिहास को यहां 'पांचवा वेद' की संज्ञा दी गयी है। भारतीय धर्म एवं संस्कृति के बीज धर्म ग्रन्थों मे निहित है। 18 पुराण 108 उपनिषदों स्मृतियों, संहिताओं महाकाव्यों एवं संस्कृत ग्रन्थों में निबद्व है।

महाभारत में कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया निष्काम कर्म का उपदेश सभी भारतवासियों और विश्व के अन्यवासियों के भी उपयोगी है। कृष्ण अर्जुन से कहते है कि ''कर्मण्येवधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफल हेतू भूर्मा ते संगोस्त्वथिकर्मणि''।। अर्थात 'कर्म करते जाओ फल की इच्छा मत करो' यह उपदेश भारतवासियों की उन्नति के लिए उपयोगी है। संस्कृत भाषा स्वंय में इतनी सरल, सरस मधुर एवं प्रभावोत्पादक है कि इसे सुनकर, मनुष्य स्वंय में मग्न होने लगता हैं एवं झूम उठता है इसे सुनकर मन में परमशान्ति मिलती है। किसी शायर ने लिखा है कि–यूनान मिश्र रोम सब मिट गये जहाँसे बाकी रहा है जग में नामोनिशां हमारा। कुछ बात है कि 'हस्ती मिटती नहीं हमारी' सदियों रहा है दुश्मन दौर जहाँ हमारा।

संस्कृत भाषा में उदान्त कवियों के प्रति प्रकट भात स्वतः मिल जाते है–जैसे उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थ गौरवं''।

संगीत की दिशा में महान नाटककार भर्तृहरि ने संगीत एवं अभिनय के सभी सूत्र संस्कृत में लिखे है। राजा भर्तहरि का 'नाटयशास्त्र' विश्व की अद्वितीय कृति है। स्वप्न एवं शकुन शास्त्र भी संस्कृत में लिखे गये है। इसके द्वारा मनुष्य की नित्य क्रियाओं में होने वाली विविध क्रियाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं विपत्तियों से सचेत होकर सुरक्षित रह सकता है। शिल्प एवं वास्तुशास्त्र ग्रन्थ भी संस्कृत भाषा में ही लिखे पायें गये। इन ग्रन्थों की प्रमाणिकता हजारो साल पुराने मन्दिरों के अवशेषों से प्राप्त हुए है।

चिकित्सा शास्त्र के अनेक संस्कृत ग्रन्थ जिनमें मनुष्य एवं पशु–पक्षीयों की चिकित्सा के तरीकों का वर्णन किया गया है।

ज्योतिष को भारत माता का दिव्य–नेत्र माना जाता है।

ज्योतिष गणित, ज्योतिष संस्कृत ग्रन्थों से मनुष्य अनेक प्रमाणिक गणनाएँ आसानी से कर सकता है। प्रक्षेपास्त्र प्रणाली भी ज्योतिष ग्रन्थों पर आधारित है। भाषा के क्षेत्र में संस्कृत ग्रन्थों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। संस्कृत भाषा से ही अन्य भाषाओं का उदय हुआ। इन भाषाओं में अधिकांश भाग संस्कृत के ही आज भी विद्यमान है। यदि हिन्दी से संस्कृत भाषा के शब्दों को निकाल दिया जाए तो भाषा अस्तित्वहीन हो जायेगी।

संस्कृत भाषा ही सभी भाषाओं की जननी है। इसी से द्रविड़, तमिल, बंगला, मराठी आदि भाषाओं का उदय हुआ है। संस्कृत ही समस्त भारत वर्ष को एकता सूत्र में बाँधती हैं। संस्कृत भाषा का शब्दकोष बहुत वृहद है।

संस्कृत ग्रन्थों में वृक्षों की महानता का भी विस्तार पूर्वक वर्णन है। पीपल, आम, वट वृक्ष आदि धार्मिक महत्त्व के है। वृक्षों का प्रकृति एवं पर्यावरण से जोड़ते हुए इनको संरक्षण देने की बात कही गई है।

संस्कृत भाषा ही भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का परिचायक है। संस्कृत भाषा का ज्ञान ही हमें राष्ट्रीय भावना को जागृत कराता है। भारत देश के प्राण संस्कृत में एवं पहचान संस्कृत भाषा में निहित है। बिना संस्कृत भाषा के भारत की कल्पना नहीं की जा सकती है। भारतवर्ष को अखण्ड एवं एक सूत्र में पिरोनें का सूत्र संस्कृत साहित्य मे ही निहित है। हमारे देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं व्यावहारिक संस्कृति संस्कृत ग्रन्थों में वर्णित है। वेद, पुराण स्मृति साहित्य एवं संहिताए संस्कृत की अमूल्य धरोहर रही है। संस्कृत भाषा ही हमारी सभ्यता एवं संस्कृति की जड़ है, इसके क्षीण होने पर भारत की कल्पना नही की जा सकती है।

''छिन्नै मूल नैव शाखा च पत्रं''

वस्तुतः संस्कृत भाषा ही भारत की सुख, समृद्धि, उन्नति एवं एकता का जीवंत प्रमाण है। विश्व के देश भी हमारी संस्कृति के आगे नतमस्तक हो उठते है। अतः संस्कृत ही हमारी संस्कृति की अमिट पहचान है।